श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय, छोटीखाटू (राजस्थान) द्वारा आयोजित 'सम्मान–समारोह' के अवसर पर बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–18.12.2016, स्थान–छोटीखाटू, राजस्थान)

श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय के तत्वावधान में आयोजित 'सम्मान समारोह' में प्रमुख रूप से उपस्थित केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल जी, राजस्थान सरकार के सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्री युनूस खाँ साहब, डॉ॰ महेशचन्द्र शर्मा जी, श्री पवनपुत्र बादल जी, पुस्तकालय के संरक्षक श्री महावीर बजाज जी, पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द बेताला जी, मंत्री श्री भंवरलाल टॉक जी, उपाध्यक्ष श्री कपूरचन्द बेताला जी, श्री लक्ष्मणदान कविया जी, डॉ॰ के॰सी॰ गोस्वामी जी, सुधी श्रोतावृन्द, मीडिया– प्रतिनिधिगण, देवियों, सज्जनों!!

मैं सबसे पहले इस संस्था के पदाधिकारियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मुझे इस महत्वपूर्ण आयोजन में उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया। राजस्थान प्रदेश के नागौर जिले के सुदूर अंचल के इस गाँव के जिन महानुभावों ने इस पुस्तकालय की स्थापना का संकल्प लिया होगा–वे कितने दूरदर्शी एवं राष्ट्रप्रेमी थे–इस बात का अनुभव मुझे यहाँ आकर प्राप्त हुआ है। आप सब इस बात से सहमत होंगे कि ऐसे पुस्तकालय पूरे मानव–समाज को सुशिक्षित एवं संस्कारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आज इस मौके पर इस पुस्तकालय के संस्थापकों को मैं नमन करता हूँ।

आपकी सतत् सक्रियता यह प्रमाणित करती है कि यह पुस्तकालय केवल पुस्तक आदान–प्रदान का केन्द्र ही नहीं है, वरन् एक ऐसी संस्था के रूप में भी विकसित हुआ है, जो साहित्यिक एवं वैचारिक गोष्ठियों के द्वारा समाज को जागरूक एवं सुशिक्षित करने का बड़ा

गुरूत्तर काम कर रहा है। आज का यह 'सम्मान–समारोह' उसी का प्रतिबिम्ब है। यह आयोजन पिछले सताईस वर्षों से लगातार संचालित हो रहा है–यह अत्यन्त खुशी की बात है।

'पंडित दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान', 'कन्हैयालाल सेठिया मायड़ भाषा सम्मान' तथा 'छोटीखाटू गौरव सम्मान' के तीन महत्वपूर्ण पक्ष हैं। एक सम्मान, साहित्य के प्रति समर्पित है; दूसरा अपनी राजस्थानी भाषा के प्रति श्रद्धा ज्ञापित करता है, तो तीसरा अपने गाँव की माटी के प्रति सम्मान एवं प्रेम प्रकट करता है। इस सम्मानों की परिकल्पना इसलिए भी महत्वपूर्ण है– क्योंकि इसमें अपनी भाषा, साहित्य तथा मातृभूमि– इन तीनों के प्रति गौरव–बोध जागृत होता है।

मैं आज सम्मानित होनेवाले सभी महानुभावों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इस प्रकार के आयोजन हमारे युवाओं में अपनी भाषा, संस्कृति, साहित्य एवं जन्मभूमि के प्रति अनुराग जागृत करेंगे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक प्रखर चिन्तक, 'एकात्म मानववाद' के प्रवर्त्तक तथा एक निष्कलंक राजनेता के रूप में विख्यात रहे हैं। यह उनका शताब्दी–वर्ष है। हममें से बहुत सारे कार्यकर्त्ता उनके चिन्तन से प्रेरित–प्रभावित होकर राजनीतिक–सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं। आज भी उनके चिन्तन के आलोक में देश की कई महत्वपूर्ण योजनाएँ संचालित हो रही हैं। आपकी संस्था उनके नाम पर यह पुरस्कार पिछले 27 वर्षों से प्रदान करती आ रही है– यह आप सबकी उनके प्रति श्रद्धा का परिचायक है।

महाकवि कन्हैया लाल सेठिया राजस्थानी तथा हिन्दी भाषा के सुप्रतिष्ठित कवि रहे हैं। उनकी 'धरती धोरां री' कविता तो राजस्थान मे जन–जन को कंठस्थ है। अपनी भाषा के प्रति उनका अपार अनुराग रहा

है। उनकी स्मृति में 'मायड़ भाषा–सम्मान' की परिकल्पना भी अत्यन्त प्रेरक है।

अपने गाँव या क्षेत्र का व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की सेवा करते हुए किसी क्षेत्र विशेष में सुप्रतिष्ठित होता है तो उससे पूरे अंचल का गौरव बढ़ता है। हर व्यक्ति की प्रगति के पीछे कहीं–न–कहीं उसके घर–परिवार और पूरे परिवेश का योगदान होता है, जहाँ की मिट्टी में वह पला–बढ़ा होता है। एक तरफ वह व्यक्ति अपनी माटी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है, तो दूसरी तरफ वह स्थान, वह अंचल भी आनंदित होता है, जिसका वह विशिष्ट व्यक्ति प्रतिनिधित्व करता है। गाँव के नाम से इस गौरव–सम्मान को जोड़कर, आपने बहुत ही हृदयस्पर्शी एवं सामयिक निर्णय लिया है– मैं इस प्रयास की भी हृदय से सराहना करता हूँ।

इस पुस्तकालय के आयोजनों में बड़े–बड़े विचारक, चिन्तक, साहित्यकार, राजनेता पधार चुके हैं। यह इस संस्था का सौभाग्य है। आज के पावन सुअवसर पर आप सब प्रबुद्ध–जन से मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि अपनी माटी से जुड़े रहकर राष्ट्र के प्रति अपना सर्वश्रेष्ठ अर्पित करने हेतु सदैव तत्पर रहें।

मुझे बताया गया है कि इसी गाँव के प्रखर चिन्तक साहित्यकार तथा सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र के प्रभावी व्यक्ति श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने अपनी बहुआयामी सक्रियता से, केवल इस पुस्तकालय को ही नवीन दिशा एवं दृष्टि प्रदान नहीं की, अपितु कोलकाता महानगर में निवास करते हुए, वहाँ के विराट हिन्दी भाषी –समाज को भी उन्होंने प्रेरित –प्रभावित किया। कोलकाता की कई हिन्दी भाषी संस्थाएँ, उनके विचार–आलोक से दीप्त हुई हैं। आपके गाँव की माटी के वे सचमुच गौरवशाली व्यक्तित्व थे। आपने उन्हें 'छोटीखाटू

गौरव सम्मान' प्रदान कर एक सुयोग्य व्यक्तित्व का चयन किया है। यह सही है कि इस सम्मान को प्राप्त करने हेतु वे आज सदेह हमारे बीच उपस्थित नहीं हैं– पिछले कुछ महीनों पूर्व वे दिवंगत हो चुके हैं –परन्तु, यह सम्मान उनकी कर्मठता का अभिनन्दन है, उनकी तेजस्विता और गुणों का अभिवंदन है –इसलिए मैं इस प्रयास की भी हृदय से सराहना करते हुए दिवंगत जैथलिया जी के प्रति भी अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करता हूँ।

पं॰ दीनदयाल जी के चिन्तन को सर्वव्यापी बनाने में डॉ॰ महेशचन्द्र शर्मा जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और वे पं॰ दीनदयाल जी के अनेक प्रकल्पों से जुड़े हैं। मैं उन्हें भी साधुवाद देता हूँ।

श्री लक्ष्मणदान जी राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए सतत् संघर्षशील रहे हैं एवं अपनी लेखनी से राजस्थानी साहित्य को काफी समृद्ध किया है, मैं उनको भी साधुवाद देता हूँ।

डॉ॰ गोस्वामी ने चिकित्सा के क्षेत्र में ।प्प्डै जैसी संस्था में जो कीर्त्ति अर्जित की है, उससे छोटीखाटू का गौरव बढ़ा है, मैं उनका भी हृदय से धन्यवाद करता हूँ। आपका गाँव सतत् विकास के पथ पर अग्रसर होता रहे और यह पुस्तकालय भी उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे –मेरी यह मंगलकामना है। ऐसे भव्य–आयोजन के लिए मैं आप सबको बधाई देता हूँ। आगामी नववर्ष आप सबके लिए सुखद, सद्भावनापूर्ण एवं समृद्धिदायक हो, मेरी यह शुभकामना है। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।